ISSN: 2277-7857

SJIF 2023 = 7.858

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

वर्ष: 17, अंक: 4, अप्रैल-जून 2024

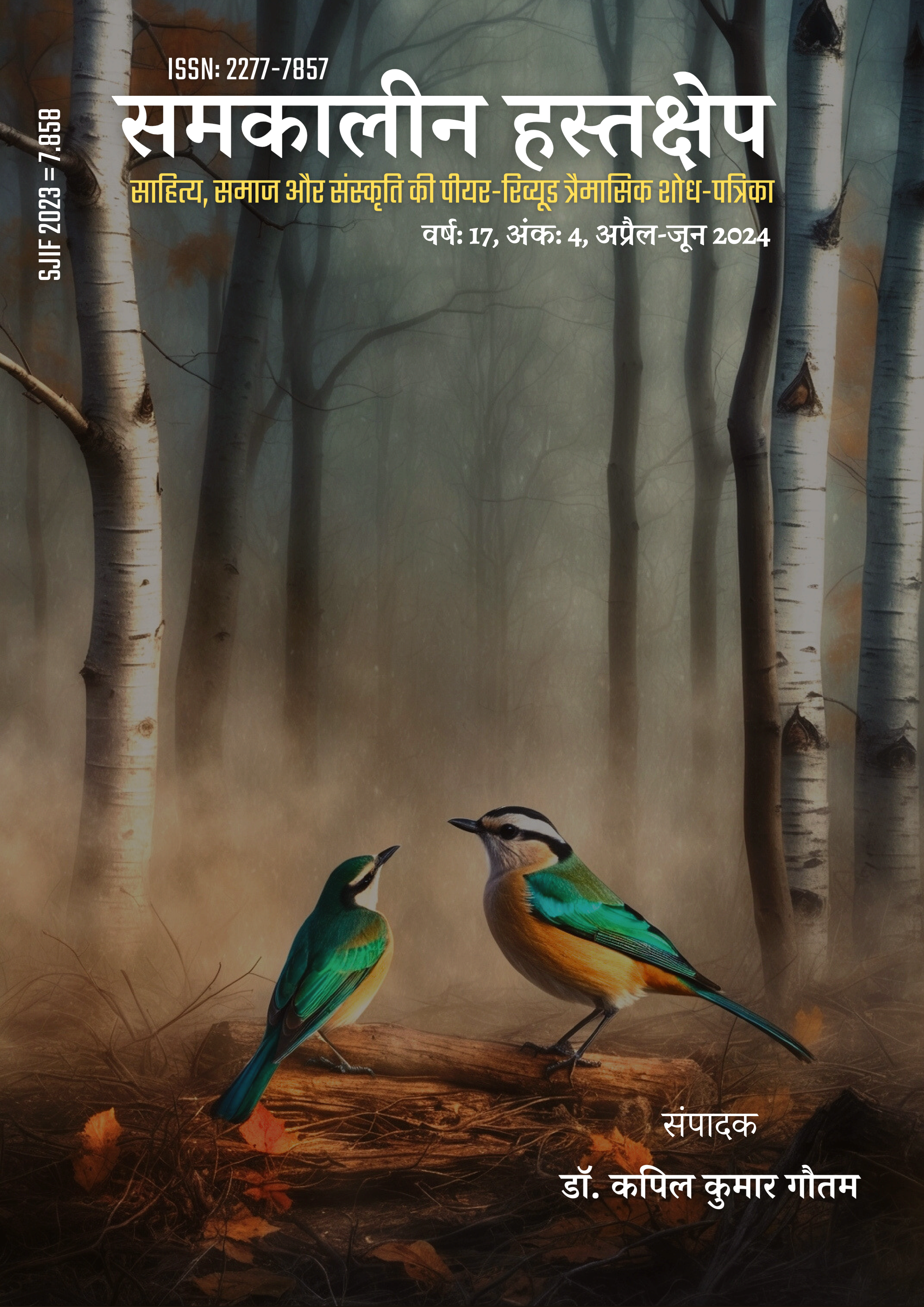

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम

वर्ष: 17, अंक: 4, अप्रैल- जून 2024

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध-पत्रिका

‘समकालीन हस्तक्षेप’ त्रैमासिक शोध-पत्रिका में प्रकाशित शोध-पत्रों/ लेखों के माध्यम से व्यक्त किये गए विचार और स्थापनाएं लेखक के अपने हैं। उनके विचार और स्थापनाओं से संपादक मंडल अथवा प्रकाशक सहमत हों, यह जरुरी नहीं है। शोध-पत्रों/ लेखों में व्यक्त विचारों और स्थापनाओं के लिए सम्बन्धित लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे। विवाद की स्थिति में सभी मामले केवल भद्रक न्यायालय (उड़ीसा) के अधीन होंगे।

इस शोध-पत्रिका के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। समीक्षा, लेखों तथा शोध-पत्रों में उद्धरण के अतिरिक्त, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश का अनुवाद, प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक माध्यम से पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता। केवल सम्बंधित शोध-पत्र के लेखक ही अपने शोध-पत्र को अकादमिक तथा व्यक्तिगत उपयोग करने हेतु निर्बाध रूप से स्वतंत्र होंगे।

© समकालीन हस्तक्षेप

वर्ष: 17, अंक: 4, अप्रैल-जून 2024

Main & Back Cover Picture Courtesy:
Leonardo AI & Tri Le via Pixabay resp.

Published by

RESEARCH WALKERS
2nd Floor, Rout Niwas, Kuansh,
Near Town Police Station, Bhadrak,
Odisha, India – 756100

E-mail: hastakshep@hotmail.com
WhatsApp Us: +91 94311 09143
Website: www.hastakshep.co.in
www.facebook.com/hastakshep
www.instagram.com/hastakshep

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
संघटक राजकीय महाविद्यालय, मीरापुर, बांगर, बिजनौर,
एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

प्रबंध-संपादक

शेषनाथ वर्णवाल
मैनेजिंग पार्टनर, रिसर्च वॉकर्स,
रॉउत निवास, नियर टाउन पुलिस स्टेशन,
कुआंश, भद्रक, ओडिशा

उप-संपादक

डॉ. अलका धनपत
पूर्व-विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़, महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस, मॉरीशस

डॉ. रजनी बाला अनुरागी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, राजिंदर नगर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. मोहन लाल चढ़ार
विभागाध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

डॉ. दीनानाथ
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सीएमपी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. प्रदीप कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
सत्यवती कॉलेज, अशोक विहार
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. राहुल सिद्धार्थ
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय,
साँची, मध्य प्रदेश

डॉ. प्रवीण कटारिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. हंसा दीप
लेक्चरार हिंदी, भाषा अध्ययन विभाग,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, किंग्स कॉलेज सर्किल,
टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा

डॉ. विपिन कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, बिष्ट राजकीय महाविद्यालय,
श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय, लंबगांव,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

डॉ. उमाशंकर कौशिक
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग शास्त्र
के.जे. सोमैया इंस्टिट्यूट ऑफ़ धर्मा स्टडीज,
सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय,
पूर्वी मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. अनीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. विकास कुमार पाठक
समन्वयक, अनुवादिनी फाउंडेशन,
अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. शरद पंडरीनाथ सोनवने
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), पालि प्राकृत
विभाग, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत
विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर

डॉ. प्रतीक सागर
असिस्टेंट प्रोफेसर, आर्ट एंड डिजाईन विभाग,
शारदा स्कूल ऑफ़ डिजाईन, आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग,
शारदा यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नॉएडा

डॉ. अवधेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), हिंदी विभाग,
डॉक्टर हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश

डॉ. सुनीता गुरुंग
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. लेखराम सेलोकर
पी-एच. डी. (बौद्ध अध्ययन)
आनंद बुद्ध विहार, समता नगर,
नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ. लोकेश चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग,
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय,
निंबाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

डॉ. अमित कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
राजा गार्डन, नई दिल्ली

डॉ. आमिर खान अहमद
असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
हरी-गायत्री दास महाविद्यालय, गुवाहाटी
विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम

डॉ. संदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ़ लीगल स्टडीज,
मदरहूड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखंड

डॉ. प्रत्युष प्रशांत
पी-एच.डी., सेंटर फॉर वीमेंस स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अनुक्रम

वर्ष: 17, अंक: 4, अप्रैल-जून 2024

सम्पादकीय

1.	किसान आन्दोलन की अन्तः प्रक्रियाएँ और प्रेमचन्द की कहानियाँ	रजत सिंह, डॉ. अमृता	8-12
2.	उदय प्रकाश की कविताओं में नव-उपनिवेशवाद	डॉ. सत नारायण	13-17
3.	विनोद कुमार शुक्ल का काव्य संसार	अंजू कृष्णियाँ, डॉ. स्वर्णा	18-22
4.	ऋग्वेदकालीन नारी एवं राष्ट्र की समृद्धि: एक अध्ययन	विनोद कुमार बुटोलिया	23-25
5.	भारत में अनुसूचित जाति की समस्याऐं : आज और कल	फूल सिंह गंगवाल	26-28
6.	बंगमहिला की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना	सुंदरम शांडिल्य	29-33
7.	उत्तराखण्ड में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की अनुसूचित जाति के उत्थान में भूमिका	पूरन राम, प्रो. मीना पथनी	34-38
8.	नाट्य साहित्य में लोकनाट्य : परम्परा और प्रयोग	प्रियंका उपाध्याय	39-42
9.	पोक्सो अधिनियम, 2012 के अंतर्गत विद्यालयों में किए जा रहे प्रयास	चेतना जठोल, प्रो. रंजीत कौर	43-46
10.	डिजिटल-लर्निंग में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन	मीनू नावारिया, डॉ. लोकनाथ	47-52
11.	भारतीय सभ्यता और संस्कृति का समन्वय: बौद्ध शिक्षण के विशेष संदर्भ में एक समकालीन उपक्रम	सतवीर राव	53-56
12.	नागार्जुन के उपन्यासों में निहित राजनीतिक संदर्भ	नन्दलाल	57-60
13.	कुमारसम्भवम् एवं रघुवंशम् महाकाव्यों में पर्यावरण चिन्तन	लोकेन्द्र गुर्जर, डॉ. मोहन लाल मेघवाल	61-64
14.	डॉ. भीमराव अंबेडकर के सामाजिक और राजनीतिक विचार एवं वर्तमान दौर में उनकी प्रासंगिकता	ज़ोया, डॉ. भानु प्रताप राय, प्रभात रंजन सिंह	65-70
15.	कुमार कृष्ण की कविता में पर्यावरणीय चेतना	मुकेश कुमार	71-76
16.	अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजनीतिक हेराफेरी में सोशल मीडिया की जिम्मेदारी	पूरन चंद्र पांडे, डॉ. के.बी.अस्थाना	77-82
17.	योगयाज्ञवल्यक एवं वशिष्ठ संहिता में वर्णित अष्टांग योग का तुलनात्मक अध्ययन	कुंजविहारी शाक्य, डॉ. उपेन्द्र बाबू खत्री	83-86
18.	युद्ध और हिन्दी कहानी : 'कौशिक' की कहानियों के विशेष संदर्भ में	आकांक्षा राय, श्वेता सिंह	87-90
19.	सत्यभामा आड़िल की आधुनिक कविताओं में नारी-विमर्श	सीमा मिश्रा, डॉ. कल्पना मिश्रा	91-94
20.	आधुनिक हिंदी का महान खंडकाव्य- पुष्पवाटिका	डॉ. राजा राम	95-100
21.	पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न समुदायों की सांस्कृतिक विशेषताएँ	अमृता कुमारी साह	101-104
22.	मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में बाजारवाद एवं पूंजीवादी व्यवस्था	डॉ. अंजू, प्रो. नवीन चंद्र लोहनी	105-108
23.	सामाजिक दायित्व के निर्वहन में कॉर्पोरेट संचार की भूमिका	अजय कुमार	109-112
24.	सामाजिक यथार्थ और मधु कांकरिया	जितेन्द्र कुमार राणा, डॉ. राहुल कुमार	113-116
25.	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में संस्कृतिवाद	प्रतीक्षा, प्रो. शर्मिला सक्सेना	117-120
26.	हृदयेश के उपन्यास 'चार दरवेश' में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन	अंजनी कुमार, डॉ. बालेन्द्र सिंह यादव	121-124

27.	कृष्णा सोबती की रचना 'मित्रो मरजानी' में नारी चेतना	डॉ. प्रकाश चंद	125-128
28.	नागार्जुन की वैचारिकी में सामाजिकता-बोध	डॉ. मंटू कुमार साव	129-132
29.	स्वास्थ्य: महिलाओं की पहुँच से दूर की सुविधा	कल्याणी सिंह	133-137
30.	सामाजिक संचेतना के संवाहक बाबू जगजीवनराम	डॉ. अर्चना बौद्ध	138-142
31.	हिंदी शिक्षण : आज की आवश्यकता	पवना शर्मा	143-147
32.	'घुटन' में व्यक्त स्त्री जीवन	डॉ. सुनीता	148-150
33.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा और पुरातन गणित	कविता आर्य रामाणी	151-154
34.	युग चेतना के ओजस्वी कवि : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	डॉ. अंजु	155-159
35.	शेखर जोशी की आत्मकथा में समाज एवं संस्कृति	गौरव कुमार	160-162
36.	मैथिली समालोचना- साहित्य की स्थिति	डॉ० अरविन्द कुमार सिंह झा	163-168
37.	भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रकृति, जल एवं पर्यावरण संरक्षण	भानु प्रताप सिंह	169-172
38.	भारत सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु प्रदत्त प्रमुख नीतियाँ : संवैधानिक उपबन्धों से वर्तमान तक	डॉ. पंकज कुमारी	173-179
39.	मध्य प्रदेश की पूराविरासत मन्दसौर की बौद्ध गुफाएँ	आकाश मौर्य, डॉ. नीरजा शर्मा	180-185
40.	'रेडियो कोसी' उपन्यास में कोसी नदी पर तैरता जनजीवन	चित्रा साह	186-188
41.	श्रीरामचरितमानस: एक आचार संहिता के रूप में	प्रकाश कुमार चंद्राकार, डॉ. डी. लक्ष्मी	189-195
42.	प्लेटो के साहित्यिक दृष्टिकोण का पुनर्विवेचन	डॉ. सुधीर कुमार अवस्थी	196-199
43.	अजंता कला में जातक : संस्कृति के आध्यात्मिक विस्तार का अद्भुत प्रतिबिम्ब	डॉ. मन्तोष यादव	200-205
44.	मालिनी अवस्थी के लोक संगीत में राष्ट्रीय चेतना	सुरभि जैन	206-209
45.	21वीं सदी की हिन्दी कहानी में घरेलू कामगार	डॉ. रहीम मियाँ	210-213
46.	भारतीय ज्ञान परंपरा और संचार	डॉ. अख्तर आलम	214-217
47.	बक्साद्वार क्षेत्र के डुक्पा जनजाति की जीवनशैली	बिक्रम राई	218-222
48.	श्रीमद्भगवद्गीता का दार्शनिक चिंतन और योग की प्रधानता	डॉ. सत्यनारायण	223-228
49.	कविता की मुक्ति के लिए आदमी तक पहुँच बनाने की कवायद समकालीन कविता बरास्ते केदारनाथ सिंह	डॉ. ऋषिकेश मिश्र	229-237
50.	भारतीय समाज और किन्नर प्रतिरोध : सिनेमा के आईने में	ललित कुमार	238-242
51.	जनभाषा के रूप में हिन्दी की विकास यात्रा : आधुनिक संदर्भ में	डॉ.० हरप्रीत कौर	243-246
52.	हरनावाँ की मीराँ : संत रानाबाई	ओम प्रकाश कुमावत	247-249
53.	यूरोपियन रोमा की जड़े भारत से : कालबेलिया नृत्य और जिप्सी नृत्य का अध्ययन	रिमझिम सिन्हा	250-254

सम्पादक की कलम से...

नई शिक्षा-नीति, 2020 के लागू होने के साथ ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए गए हैं। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षण प्रणाली का पूरा प्रारूप और पाठ्यक्रम बड़े स्तर पर बदल गया है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक और उपयोगी बनाने के लिए नई शिक्षा-नीति के प्रारूप में कई विशेष प्रावधान किए गए हैं, जैसे कि नई शिक्षा-नीति में विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम संबंधी बोझ को कम करने का प्रयास किया गया है। इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया है कि शिक्षा के लिए भाषा कोई बाधा न बने। साथ ही, सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम का प्रारूप औद्योगिक और व्यावसायिक उपयोग की दृष्टि से बनाया गया है। विद्यार्थियों की सुविधा के अनुसार परीक्षाओं का प्रारूप परिवर्तित किया गया है। मूल्यांकन आधारित शिक्षा व्यवस्था को प्रदर्शन एवं निष्पादन आधारित शिक्षा व्यवस्था के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया है। विद्यार्थियों के ऊपर शिक्षा के अनुचित दबाव को कम करने का प्रयास किया गया है।

आधुनिक युग के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में निरंतर परिवर्तन होते रहने चाहिए किन्तु नई शिक्षा-नीति का जब व्यावहारिक पक्ष देखते हैं तो कई स्तरों पर सुधार की अभी भी आवश्यकता दिखाई देती है। नई शिक्षा-नीति के क्रियान्वयन में सबसे बड़ी कमी रोडमैप की है। बिना किसी रोडमैप के इतना बड़ा परिवर्तन कर दिया गया है, जिसकी ठीक से जानकारी संस्थाओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों को नहीं है। शिक्षकों के मध्य नई शिक्षा-नीति के संदर्भ में जानकारी का अभाव है। अभी तक कोई प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को नई शिक्षा-नीति से अवगत कराने के लिए नहीं चलाया गया है। केवल विश्वविद्यालय स्तर पर कुछ संगोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन यदाकदा देखने को मिलता है, उनमें भी एक पूर्वाग्रहग्रस्त दृष्टिकोण के साथ नई शिक्षा-नीति की केवल प्रशंसा ही सुनने को मिलती है। इसके लिए आवश्यकता है कि संस्थाओं को नई शिक्षा-नीति के अनुरूप संसाधनों और व्यवस्थाओं की उचित जानकारी होनी चाहिए। शिक्षकों को पाठ्यक्रम और मूल्यांकन का प्रारूप समझाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए। विद्यार्थियों को भी विषय चयन और परीक्षा की नई पद्धति की सही जानकारी होनी चाहिए।

नई शिक्षा-नीति में विद्यार्थियों को अपने कौशल का प्रदर्शन और विकास करने का अवसर प्रदान किया गया है। उच्च शिक्षा में परंपरागत पाठ्यक्रम के साथ-साथ वोकेशनल कोर्स को भी लगाया है। जिसका उद्देश्य है कि विद्यार्थियों में मूलभूत पाठ्यक्रम के ज्ञान के साथ-साथ आधुनिक व्यावहारिक और प्रोफेशनल ज्ञान का भी विकास हो सके। किन्तु वास्तविकता यह है कि जो वोकेशनल कोर्स पाठ्यक्रम में दिये जा रहे हैं, संस्थाएं और शिक्षक दोनों ही उनके संदर्भ में अनभिज्ञ हैं। पुरानी शिक्षा-नीति से उपाधि प्राप्त शिक्षकों में वोकेशनल कोर्स के पाठ्यक्रम की पर्याप्त समझ नहीं है। ऐसे पाठ्यक्रमों के अध्ययन-अध्यापन के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण देने की जरूरत है। अथवा वोकेशनल पाठ्यक्रमों के लिए सरकार अलग से एक ऑनलाइन साझा मंच भी बना सकती है, जिसमें सभी विद्यार्थी अपनी भाषा में वोकेशनल कोर्स के पाठ्यक्रम को भलीभाँति पढ़ और समझ सकें। क्योंकि वर्तमान समय में तो महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में वोकेशनल कोर्स को उसकी उपयोगिता के अनुरूप पढ़ाया नहीं जा रहा है। इसी तरह बोर्ड परीक्षाओं से लेकर उच्च शिक्षा तक के विद्यार्थी के ऊपर परीक्षा प्राप्तांकों का दबाव कम करने के लिए प्राप्तांकों को आंतरिक और बह्या में विभाजित किया गया है। प्राप्तांकों को ग्रेडिंग पद्धति में परिवर्तित किया जा रहा है। ये पद्धति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लागू है। भारत की संस्थाओं के द्वारा मूल्यांकन हेतु यह ग्रेडिंग पद्धति उपयोग में लाने से अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा किया जा सकेगा। किन्तु इस प्रणाली से विद्यार्थियों में परीक्षा की गंभीरता प्रभावित हो रही है।

नई शिक्षा-नीति में मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रदान करने का विकल्प सराहनीय है किन्तु स्कूली शिक्षा हेतु अभिभावकों का रुझान अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों की तरफ अधिक हो गया है। सरकार को इसके निदान पर भी विचार करना होगा। निजी विद्यालयों की बढ़ती मनमानी पर लगाम लगानी होगी। क्योंकि अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में फीस, प्रवेश और पाठ्य पुस्तकों के नाम पर लूट चल रही है जिस पर रोक लगनी चाहिए। वास्तव में पूरे भारत में एक समान और मुफ्त शिक्षा की आवश्यकता है, ताकि प्रत्येक नागरिक सीमित संसाधनों के बावजूद सबके बराबर शिक्षा ग्रहण कर सके।

कपिल कुमार गौतम